महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का
ग्लोबल पैगोडा मुम्बई के कार्यक्रम में संबोधन
स्थान–दिल्ली दिनांक– 25.12.2015

आज मुझे अध्यात्म के एक प्रमुख केन्द्र 'ग्लोबल पगोडा, मुंबई' में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, यहाँ आकर मुझे असीम आनंद का अनुभव हो रहा है। भारत के प्रमुख औद्योगिक शहर की आपाधापी एवं चकाचौंध के बीच, सभी प्रकार के कोलाहलों एवं चकाचौंध से दूर इस केन्द्र में आकर मिलने वाली मानसिक शांति इस बात की सूचक है कि बाहर दिखने वाली ये बाह्य समृद्धि मन को शांति नहीं प्रदान कर सकती है। सच कहें तो मन की खुशी का सारा रहस्य मन के अंदर ही कहीं है।

इस केन्द्र का महत्व इस बात से और बढ़ जाता है कि यह मन के अंदर इन्हीं रहस्यों की वास्तविकताओं से व्यक्ति को परिचय कराता है। आपाधापी के इस दौर में मनुष्य ने अंदर की दुनिया को छोड़ कर, बाहरी दुनियाँ में खुशी तलाश करना शुरू कर दिया है, जिस कारण हमारा देश ही नहीं अपितु सारा संसार विभिन्न प्रकार की बुराइयों, जैसे कि आतंकवाद, संप्रदायवाद, जातिवाद इत्यादि से जूझ रहा है।

ऐसी घड़ी में सभी प्रकार के विवादों से ऊपर उठ कर विशुद्ध मानवीय धर्म से लोगों को परिचित कराना आज के समय की आवश्यकता हो गई है। मुझे इस बात से अत्यंत प्रसन्नता होती है कि पूज्य गुरू जी आचार्य गोयनका जी के भागीरथ प्रयास से आयोजित

'विपश्यना' की ध्यान–साधना के माध्यम से ज्यादा–से–ज्यादा लोगों को जीवन जीने के सही रास्तों से अवगत कराया जा रहा है।

मेरे विचार से यही वह पद्धति है, जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति आत्म–निरीक्षण द्वारा आत्म–शुद्धि कर सकता है। इस सार्वजनीन साधना–विधि का परम उद्देश्य ही है – विकारों का संपूर्ण निर्मूलन एवं परमविमुक्ति की अवस्था को प्राप्त करना। जब प्रत्येक व्यक्ति इस सत्य से परिचित होने लगेगा, तो वह खुद भी शांत होने लगेगा तथा समाज में भी शांति होने लगेगी। फलतः धीरे–धीरे सम्पूर्ण विश्व शांति के मार्ग पर चल पड़ेगा, जो कि भारतवर्ष का सभी देशों के लिए प्राचीन काल से ही दिव्य संदेश और मूल मंत्र रहा है।

मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि इस संप्रदाय विहीन तथा भारत की अत्यंत प्राचीन साधना पद्धति – 'विपश्यना' – के ध्यान रूपी मार्ग पर चल कर विश्व सभी प्रकार की बुराइयों से मुक्त होगा तथा भारत पुनः अपने गौरवशाली अतीत को प्राप्त करेगा और यह भव्य 'ग्लोबल पगोडा' इस इतिहास का साक्षी बनेगा।

अंत में, मैं पूज्य गुरू जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए इस केन्द्र तथा इस विद्या के अभिवर्द्धन हेतु निःस्वार्थ जुड़े हुये सभी लोगों को साधुवाद तथा धन्यवाद देता हूँ।

जय हिन्द!

***